

नौशेरा का शेर



www.vithika.org

वीथिका ई पत्रिका

साहित्य, कला, संस्कृति और विज्ञान को समर्पित

वीथिका

संपादक मंडल

अर्चना उपाध्याय

चित्रा मोहन

सुमित उपाध्याय

प्रधान संपादक

मुख्य सलाहकार संपादक

प्रबंध संपादक

वीथिका परिवार

श्री मनोज कुमार सिंह

श्री अविनाश पाण्डेय

डॉ अखिलेश पाण्डेय

जय श्री

डॉ शिवमूरत यादव

उज्ज्वल उपाध्याय

अश्विनी तिवारी

अर्चिता उपाध्याय

वेब डिज़ाइन

रोशन भारती

संरक्षक

यशिका फाउंडेशन, मऊ

संपादकीय समिति

डॉ मोहम्मद ज़ियाउल्लाह

डॉ धनञ्जय शर्मा

डॉ सुधांशु लाल

एड. सत्यप्रकाश सिंह

विनोद कोष्ठी

श्री नन्दलाल शर्मा

कवर पेज संपादक

पूजा मद्धेशिया

कार्टून संपादक

कृतिका सिंह

www.vithika.org

वीथिका ई-पत्रिका

UDYAM-UP 55 0010534

vithikaportal@gmail.com

वीथिका

आपकी वीथिका

अंक 06

नवम्बर, 2023

गलियों की बात	04
नौशेरा का शेर	05
स्वामी संत शिवनारायण जी ससना धाम	09
अशरीरी निःस्वार्थ प्रेम- रासलीला	13



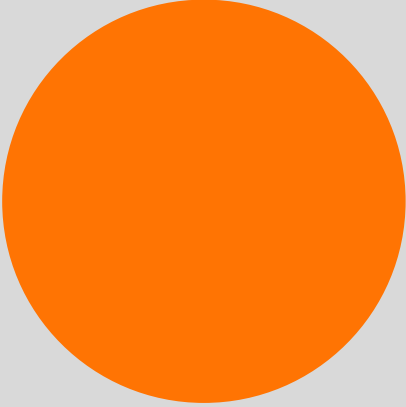
दशहरा-दीपावली	14
मुझ पर खुलता दरवाज़ा	16
मठहाउस	18
दन्त स्वास्थ्य: आपके स्वास्थ्य का आईना	20

कहानी -जोड़-घटाव	22
लघुकथा - बिकासुल	26
लघुकथा नेता जी	27
सोंधी मिट्टी	28



गलियों की बात

नवम्बर, 2023



अर्चना उपाध्याय
प्रधान संपादक



हमारा समाज पर्व, त्यौहार आदि के माध्यम से आपस में जुड़ा हुआ है। ये पर्व न केवल हमें खुश होने के लम्हे देते हैं वरन ये हमें अपनी संस्कृति से जोड़ते भी हैं, त्योहारों के इस महीने में सबसे पहले सभी सुधी पाठकों को दशहरे व दीवाली की असीम शुभकामनाएं।

हमारे बीच गलियों, गांवों, नगरों में बने मंदिर हमारी आस्था और विश्वास के केंद्र हैं। बहुत से मंदिरों को तो अब समय के साथ पर्व-व्यापार आदि के माध्यम से न केवल पहचान मिली है बल्कि उनका आवश्यक संरक्षण भी किया गया है।

वहीं हमारी गलियों-ग्रामों में बहुत से ऐसे मंदिर हैं जो इतिहास के पन्नों में तो अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, जिनकी बनावट व स्थापत्य-कला आज के इंजीनियरों को भी अचम्भित कर देती है, परन्तु देखरेख के अभाव में उनका शिल्प तनिक धुंधला सा हो चला है।

वीथिका ई पत्रिका इस अंक से भारतीय संस्कृति व शिल्प के इन अनमोल धरोहरों को आपके सामने ला रही है।

पाठक वीथी



**डॉ विनय मिश्र, वरिष्ठ साहित्यकार
राजस्थान**

इस रचनात्मक उपयोगी और दिशाबोधी पहल के लिए आपकी पूरी टीम को ढेरों बधाई और हार्दिक शुभकामनाएं। 'वीथिका' जनसंवाद विचार संवेदना कला साहित्य और संस्कृति की दर्शनीय संग्रहणीय और विचारणीय वीथिका बने।



**प्रबुद्ध पाठकगण
सादर नमस्कार**

वीथिका ई पत्रिका के लिए हमारे सम्मानित पाठकों के विचार व प्रतिक्रियाएं बहुत ही महत्वपूर्ण हैं . पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vithika.org पर उपलब्ध है, वहां हर लेख पर आपकी प्रतिक्रिया हमें प्राप्त होती है जो हमारा मार्गदर्शन तो करती ही है साथ ही हमारा मनोबल भी बढ़ाती है .

आपकी पोस्ट व विचार को हमने यहाँ मैगजीन में स्थान देने का निर्णय लिया है . आप अपनी प्रतिक्रिया हमें मेल / whatsapp कर सकते हैं

Gmail : vithikaportal@gamil.com

Whatsaap : 8175800809

**डॉ. नमिता राकेश जी,
वरिष्ठ साहित्यकार
राजपत्रित अधिकारी, नई दिल्ली**

वीथिका की खास बात कि इसके हर पृष्ठ की साज सज्जा व रंग रूप देखते ही बनता है। सम्पादक की कला दृष्टि को इसका श्रेय जाता है।

नौशेरा का शेर

ब्रिगेडियर उस्मान



दिशा सिंह
मऊ



इतिहास का झरोखा

भा रतीय सेना के वीर सैनिकों की गरिमा को बयान करने वाले कई महान योद्धाओं में से एक नाम है - ब्रिगेडियर उस्मान । उनकी जीवन कथा और सैन्य सेवा ने भारतीय सेना के लिए एक अद्वितीय प्रतिबद्धता का स्तम्भ रखा है। जब भारत को आजादी मिली तो उस समय केवल 18 ब्रिगेडियर रैंक के अधिकारी थे और ब्रिगेडियर मुहम्मद उस्मान उनमें से एक थे।

अपने साथियों में उम्र में सबसे छोटे और सैम मानेकशों से तीन दिन सीनियर होने के कारण, यह लगभग तय था कि उस्मान सेना प्रमुख बनेंगे। एक सैनिक जो अपने राष्ट्र के कभी साथ विश्वासघात नहीं करता, उसने पाकिस्तान सेना की सेवा करने के, जिन्ना के आकर्षक प्रस्ताव को ठुकरा दिया। लेकिन लोगों का विश्वास जीतने के लिए यह पर्याप्त नहीं था, वह भी उस कठिन समय में जब सेना को भी भारत और पाकिस्तान के बीच धार्मिक आधार पर विभाजित किया जा रहा था। नवंबर, 1947 में उन्हें जम्मू-कश्मीर में

नौशेरा की कमान सौंपी गई थी क्योंकि पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण कर दिया था। जब कई मुस्लिम सैनिक और स्थानीय लोग पहले से ही पाकिस्तान के पक्ष में थे, तब भारत के पास एक मुस्लिम सेना कमांडर था। बेशक, कुछ आशंकाएँ थीं लेकिन वे जल्द ही शांत हो गईं क्योंकि उस्मान ने अभिवादन के रूप में 'जय हिंद' को शामिल किया, जो पहले आज़ाद हिंद फ़ौज द्वारा इस्तेमाल किया जाता था।

15 जुलाई 1912 को तत्कालीन यूनाइटेड प्राविन्स के छोटे से शहर आज़मगढ़ (वर्तमान मऊ) के बीबीपुर में जन्मे मोहम्मद उस्मान ने अपनी शिक्षा उसी शहर में पूरी की। पिता काज़ी मोहम्मद फारुक बनारस के कोतवाल थे। ब्रिटिश सरकार ने मोहम्मद फारुक के काम से खुश होकर उन्हें 'खान बहादुर' की उपाधि दी थी। उस्मान की तीन बड़ी बहनें थीं और 2 भाई थे। एक भाई गुफरान भी भारतीय सेना में ब्रिगेडियर के पद से रिटायर हुए, और दूसरे भाई सुभान पत्रकार थे। उस्मान बचपन में थोड़ा हकलाते थे। उनके पिता को एहसास हुआ कि यह आदत उन्हें सिविल सेवाओं में उत्तीर्ण होने से रोक सकती है और उन्होंने उन्हें पुलिस के लिए तैयार किया। एक बार उनके पिता उन्हें पुलिस के बड़े अधिकारी से मिलवाने ले गए। उस अंग्रेज अफसर ने उस्मान से कुछ पूछा तो उस्मान ने हकलाते हुए जवाब दिया। इसे संयोग ही कहा जाएगा कि वो अंग्रेज अफसर भी हकलाता था। उसे लगा कि उस्मान उसकी नकल कर रहे हैं। वो अफसर काफी भड़क गया और दुर्भाग्य से बैठक का उद्देश्य पूरा नहीं हो सका।

बाद में मो. उस्मान ने 1934 में अपनी स्नातक की पढ़ाई पूरी की और फिर उन्हें ब्रिटेन के प्रतिष्ठित रॉयल मिलिट्री अकादमी सैंडहर्स्ट में

सेकेंड लेफ्टिनेंट के रूप में प्रवेश करने का मौका मिला। और एक महीने के बाद, वह एक साल के लिए कैमरूनियों की पहली बटालियन में शामिल हो गए।

उस्मान ने जब तक भारतीय सेना में जाने का मन बनाया, तब तक ब्रिटिश आर्मी में भारतीयों की अफसर के तौर पर भर्ती शुरू हो गई थी. सन 1920 से ब्रिटिश सरकार ने रॉयल मिलिटरी एकेडमी, सैंडहर्स्ट में भारतीय नौजवानों के लिए रास्ते खोल दिए थे। सन 1932 में उस्मान ने सेना भर्ती में आवेदन किया और सैंडहर्स्ट के लिए चुन लिए गए। उस साल बैच कुल 45 कैटेड्रस का था। भारत के 10 लड़कों को ब्रिटिश आर्मी में अफसर के तौर पर चुना गया था।

जिस साल उस्मान सैंडहर्स्ट गए, उसी साल ब्रिटिश आर्मी ने भारत में इंडियन मिलिट्री एकेडमी (IMA) का गठन किया था। इसी साल IMA के लिए सैम मानेकशॉ, स्मिथ दून और मोहम्मद मूसा को चुना गया था। आगे चलकर मानेकशॉ भारत, दून बर्मा और मूसा पाकिस्तान की सेना के सर्वोच्च पद पर तैनात हुए। कहते हैं अगर 1948 में उस्मान शहीद नहीं हुए होते तो वो भारत के सेनाध्यक्ष जरूर बनते।

कहानी 1947 में भारत और पाकिस्तान के विभाजन के बाद शुरू होती है। वह सेना में सर्वोच्च रैंक वाले मुस्लिम अधिकारी थे और बलूच रेजीमेन्ट में पोस्टेड थे। इस वजह से पाकिस्तानी सरकार ने उन पर भारतीय सेना के बजाय अपनी सेना में शामिल होने के लिए बहुत दबाव डाला। लेकिन सभी प्रस्तावों और बल के बावजूद, ब्रिगेडियर मोहम्मद उस्मान अपने राष्ट्र की सेवा करने के अपने फैसले पर दृढ़ थे, चाहे कुछ भी हो। अंततः ब्रिगेडियर उस्मान को भारतीय सेना में डोगरा रेजिमेंट की कमान सौंपी

गई । जब 1947 में पाकिस्तान से अज्ञात जनजातियों को जम्मू-कश्मीर भेजा गया, तो उनका एक ही मकसद था कि भारतीय राज्य-जम्मू-कश्मीर पर कब्ज़ा करके उसे पाकिस्तान को दे दिया जाए। इस समय ब्रिगेडियर मोहम्मद उस्मान 77वीं पैराशूट ब्रिगेड के कमांडर थे। बाद में, ब्रिगेडियर उस्मान को झांगर शहर में 50वीं पैराशूट ब्रिगेड में भेजा गया - जो पाकिस्तान और भारत के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीतिक स्थान और युद्ध का केंद्र बिंदु था, जिसे भारतीय सेना ने खो दिया था । जिस दिन पाकिस्तानी सेना ने झांगर पर कब्ज़ा कर लिया, उसी दिन मो. उस्मान ने शहर को अपनी सेना के नियंत्रण में पुनः प्राप्त करने का वचन दिया।

इसके अलावा, वर्ष 1948 में, ब्रिगेडियर मोहम्मद उस्मान की कमान के तहत, भारतीय सेना ने नौशेरा की सफलतापूर्वक रक्षा की और केवल 102 सैनिकों के साथ लगभग 2000 पाकिस्तानियों को घायल कर दिया। उनके इस बेहतरीन प्रदर्शन और नेतृत्व के कारण उन्हें एक नाम भी मिला- नौशेरा का शेर । उनके साहसी कृत्यों ने पाकिस्तानियों को दुखी कर दिया, और पाकिस्तानी सेना ने ब्रिगेडियर उस्मान के सिर पर 50,000 का इनाम रखा। लेकिन इतनी नफरत और हत्याओं के बाद भी ब्रिगेडियर उस्मान अपराजेय रहे और उन्होंने झांगर पर दोबारा कब्ज़ा करने का अपना मिशन जारी रखा। फरवरी 1948 में, सेना को अंततः दुश्मनों को हराने और झांगर शहर से बाहर निकलने में सफलता मिली। भविष्य में, दुश्मन सैनिकों ने कई बार शहर पर कब्ज़ा करने की कोशिश की, लेकिन उन्हें हार का स्वाद ही चखना पड़ा। दोनों देशों के बीच कई महीनों तक जवाबी हमले जारी रहे।

मई 1948 में, जब पाकिस्तानी सेना मैदान में कूद पड़ी, उस समय हमला बहुत गंभीर था और इसी दौरान ब्रिगेडियर मोहम्मद उस्मान पर दुश्मन ने 25 पाउंड का गोला दाग दिया । भारत की माटी के इस लाल ने 3 जुलाई 1948 को अपने देश के लिए लड़ते हुए अपनी जान दे दी। यहां तक कि जब वह जमीन पर लेटे हुए अपनी आखिरी सांसें ले रहे थे, तब भी अपनी बटालियन के लिए उनके शब्द थे, **"मैं मर रहा हूं, लेकिन जिस इलाके के लिए हम लड़ रहे हैं, उसे दुश्मन के हाथ में न जाने दें।"** उनकी बहादुरी और साहसी कहानियाँ सभी सैनिकों और नागरिकों के लिए प्रेरणा हैं। ब्रिगेडियर उस्मान को उनकी शहादत के बाद भारत के दूसरे सबसे बड़े सैन्य सम्मान महावीर चक्र से सम्मानित किया गया था।



सत्य शब्द अन्यास सुन, शिवनारायण दास

स्वामी संत शिवनारायण जी ससना धाम

डॉ. धनज्जय शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
सर्वोदय पी.जी. कॉलेज
घोसी, मऊ



यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

बलिया जिले के ग्राम ससना बहादुरपुर में स्वामी शिवनारायण संप्रदाय के प्रवर्तक स्वामी शिवनारायण जी का मंदिर है जिसे ससना धाम के नाम से जाना जाता है। कहते हैं जब-जब इस धरती पर धर्म का नाश होता है और पापाचार बढ़ता है, तब-तब धर्म की रक्षा के लिए ईश्वर का अवतार होता है। यह अवतार अनेक संत, महापुरुषों, पीर-पैगंबरों के रूप में धरती पर ईश्वर के स्वरूप में होता है जो अपने कर्म द्वारा मानव जीवन को संदेश देते हैं, यही कारण है कि प्राचीन काल से भारत को विश्व गुरु कहा जाता है।

इन्हीं संतों में निर्गुण संत परंपरा के संत शिवनारायण साहब का नाम प्रसिद्ध है। जो अपने जीवन द्वारा भारतीय जन मानस को भक्ति का संदेश देते रहे। रीतिकालीन संत काव्य परंपरा में यारी साहब, दरिया साहब, जगजीवन दास, पलटू साहब, तुलसी साहब और सहजो बाई के साथ-साथ संत शिवनारायण साहब का नाम बहुत पवित्रता के साथ लिया जाता है।



स्वामी शिवनारायण साहब का जन्म बलिया जिले के चंदवार नामक स्थान पर पिता बाघ राय एवं माता सुंदरी के घर में तीसरी संतान के रूप में हुआ था। मूल ग्रंथ के अनुसार इनका जन्म कार्तिक सुदी दिन बृहस्पतिवार संवत् 1773 वि. को माना जाता है।

डॉ. नगेंद्र ने हिंदी साहित्य के इतिहास में स्वामी शिवनारायण का जन्म सन् 1716 ई.में मना है। स्वामी जी का जन्म ऐसे समय में हुआ था जब चारों तरफ अराजकता का वातावरण था देश में केंद्रीय प्रशासन का हास हो रहा था और चारों तरफ छोटे-छोटे सामंत एवं छत्रप जन्म ले रहे थे। बड़े सामंतों के नीचे भी छोटे-छोटे सामंत और जमींदार हो गए थे। चारों तरफ अंधकार का वातावरण था। जाति व्यवस्था, छुआछूत, वर्ण भेद अपने चरम पर था। रीतिकालीन वातावरण में साहित्य सामंतों की चहारदीवारी के अंदर कैद हो गया था। लोक जनमानस से साहित्य का कोई संबंध नहीं रह गया था। ऐसे समय में संत शिवनारायण साहब का धरती पर आना और समाज में पहले से व्याप्त कुरीतियों, छुआछूत, वर्ण-भेद एवं छोटे बड़े के भेद को मिटाना किसी चमत्कार से कम न था।

प्राप्त साक्ष्यों से अवगत होता है कि स्वामी जी के पूर्वज कन्नौज में रहते थे और कर्मवस या अन्य कारण से बंग प्रदेश में आ गए।

"जन्मभूमि है कनउज देशा,
कर्म वसी से बंग प्रदेशा।
तीरथ प्रयाग सूबा से होई,
जेहि के अमल गाजीपुर सोई।
जहूराबाद परगना आही,
आसकरन टप्पा तेहि माही।
से स्थान चंदवार कहावे,
शिवनारायण जन्म तहां पावे॥"

उपर्युक्त स्रोतों से पता चलता है कि कन्नौज प्रदेशमें अकाल पड़ने के कारण या किसी अन्य कारण से स्वामी जी के पूर्वज बंग प्रदेश में, गाजीपुर सूबा के अंतर्गत आधुनिक बलिया के चंदवार नामक ग्राम में आकर बस गए थे।

शब्दावली से ज्ञात होता है कि आप क्षत्रिय जाति के थे। "संतो भाई छतरी जाती हमारी।" स्वामी जी नरौली वंश के के राजपूत थे। अंग्रेज विद्वान ओल्डहम ने कहा है, "नरवल में निवास करने के कारण इन्हें नरौलिया कहा गया। नरौली राजपूत अपने को परिहारों की एक शाखा मानते हैं।"

स्वामी जी बाल्यकाल से ही विरक्त स्वभाव के संत थे। परमात्मा में गहरी आस्था एवं संतों के संग से भक्ति का स्रोत जग गया था। ऐसी मान्यता है की सात वर्ष की अवस्था में ही आप अपना जन्म स्थान चंदवार छोड़कर ससना चले आए ससना में आप की बहन सुभद्रा का विवाह हुआ था। ससना के पास जंगल में आकर आप तप साधना में लीन हो गए। एक दिन अकस्मात् जंगल में साधना करते समय दुखहरण साहब के दर्शन हुए उसी क्षण आपने उन्हें अपना गुरु मान लिया। गुरुदेव को परब्रह्म मानकर चिंतन और ध्यान साधना करने लगे। स्वामी जी ने गुरुन्यास में अपने गुरु का नाम लिखा है, 'दुखहरण नाम से गुरु कहावे। बड़े भाग से दर्शन पावे।

सत्य शब्द अन्यास सुन, शिवनारायण दास।
सदा रहहु मैं हिय तोही, पूरन ब्रह्म प्रकाश ॥
ज्ञान प्राप्ति के बाद आप जंगल में समाधिष्ट होकर साधना करने लगे। सात वर्ष की अवस्था में 1723 में दीक्षा ग्रहण किया और 16 वर्ष की अवस्था में आप को सत्य का बोध हुआ। सत्य का बोध होने के बाद स्वामी जी की ख्याति चारों तरफ फैल गई थी छोटे बड़े हर संत उनको जानने लगे थे और आपका उपदेश सुनने के लिए आया करते थे।

एक बार की बात है कर न जमा करने के कारण तत्कालीन मुगल बादशाह मोहम्मद शाह रंगीला द्वारा दिल्ली बुलाया गया।

इस संदर्भ में डॉ. रामचंद्र तिवारी ने अपने शोध ग्रंथ "शिवनारायण संप्रदाय और उनका साहित्य" में लिखा है, "मुगल बादशाह मोहम्मद शाह ने पोत ना देने के कारण शिवनारायण साहब को दिल्ली पकड़ मंगाया, वहां पोत मांगने पर इन्होंने स्पष्ट उत्तर दिया हम तो संत हैं। हमने कभी पोत नहीं दिया है। इस पर मुहम्मद शाह क्रुद्ध होकर इन्हें बंदीगृह में डाल दिया। वहां इनको गेहूं पीसने को मिला, वहां अन्य संतों को भी गेहूं पीसते हुए पाया गया। संत शिव नारायण के प्रभाव से कारागार में सभी संतों की चक्कियां स्वत चलने लगी यह सूचना बादशाह को मिली तो वह प्रभावित हुआ और उसने इनकी शिष्यता ग्रहण कर ली। साथ ही एक मुहर भी दी जो संप्रदाय में अब तक प्रचलित है। अन्य साक्ष्यों से यह भी पता चलता है की स्वामी जी के स्वागत में भोजन के लिए मांस परोसा गया। स्वामी जी ने कहा, "संत तो हंस की भांति मोती चुगता है।" इस पर बादशाह क्रुद्ध होकर मोतियों से भरा थाल परोसा। स्वामी जी ने मोती के थाल को अपने अंगवस्त्र से ढक दिया और कुछ देर बाद वस्त्र हटाया तो वह सुंदर व्यंजन में बदल गया था, इस चमत्कार ने मुहम्मद शाह रंगीला को उनका भक्त बना दिया। इस घटना की समीक्षा करते हुए आचार्य क्षितिमोहन सेन ने मुहम्मद शाह रंगीला के दरबारी उर्दू कवियों वली अल्लाह, नाजिम और आबरू द्वारा शिवरीनारायण साहब के प्रति श्रद्धा भाव प्रकट करने की चर्चा की है। इस आधार पर इस घटना की ऐतिहासिकता प्रकट होती है।

शिवनारायण साहब का व्यक्तिगत जीवन सरल, सदाचार तथा सहजता का जीवन था।

सत्संग की ओर आपका झुकाव छोटी अवस्था में हो गया था, इसका प्रमाण इन पंक्तियों से मिलता है:-

एक दिन संत सभा महँ गएऊ, चर्चा शब्द होत तहं रहेऊ ।

चर्चा सुनत बहुत सुख पाई, शिव नारायण सुनि मन लाई।

जनश्रुति के आधार पर शिवनारायण साहब एकांत प्रिय सच्चे साधक थे। उनका साधना स्थल आज भी स्मृति स्वरूप बचा हुआ है जो ससना गांव के उत्तर में बांस के झुरमुटों व झाड़ियों के बीच में है। जो कतिपय जंगल का अवशेष भाग है। जहां स्वामी जी भुइधरी बनाकर अपने ग्रंथों की रचना किया करते थे।

स्वामी शिवनारायण साहब नाम ब्रह्म के स्वरूप की सर्वाधिक चर्चा गुरुन्यास में की है सर्वप्रथम परम तत्व का आभास उन्हें गुरु रूप में होता है गुरु रूप में प्रतिभाषित इस सत्ता के पूर्ण ब्रह्म कहते हैं इस पूर्ण ब्रह्म से उनका तात्पर्य परब्रह्म से है क्योंकि आगे चलकर इसी ग्रंथ में वे परब्रह्म प्रतीत की चर्चा करते हैं यह ब्रह्म संसार का कर्ता और अपार गुना वाला है। उसके गुना का वर्णन संभव है। यही संसार में सर्व व्याप्त है, यह अलग है निरंजन है और जो प्राणी उसे ऐसा समझता है वह मुक्ति प्राप्त कर लेता है यह सत्य स्वरूप है यही ब्रह्म आवश्यकता अनुसार अवतार भी ग्रहण करता है।

स्वामी शिवनारायण साहब के अनेक शिष्य हुए जो उच्च कोटि के साधक एवं कवि थे। जिनके प्रयत्न स्वरूप शिवनारायण साहब का मत एक संगठन का रूप लेता गया। संप्रदाय में पांच शिष्यों को प्रमुखता दी गई है जिनमे रामनाथ साहब, लखनराम, सदाशिव, जुवराज एवम् लेखराज आदि। शिवनारायण साहब के शब्दावली में इन सभी के पद संग्रहीत हैं। रामनाथ जी को संप्रदाय के लोग संत शिवनारायण का प्रथम शिष्य मानते हैं। इनका जन्म चंदवार के निकट परसिया ग्राम में हुआ था। यह भी जाति के नरौनी राजपूत थे और उम्र में स्वामी जी से बड़े थे। रामनाथ बाबा ने कुल 60 पदों की रचना की थी।

कविता शक्ति साधारण होने पर भी उसमें संत जीवन की सहजता और लोक जीवन का माधुर्य दोनों है। रामनाथ बाबा के वंशज आज भी परसिया में रहते हैं। स्वामी जी के द्वितीय शिष्य लखन राम जी माने जाते हैं, इनका जन्म बलिया जिला के बड़सरी नामक स्थान पर हुआ था। यह जाति के परमार राजपूत थे। स्वामी जी के शब्दावली में उनके पांच-छह पद संकलित है। लखन राम जी के वंशज आज भी बड़सरी में रहते हैं। तीसरे शिष्य सदाशिव साहब बलिया जिले के रतसड़ के समीप मेवाड़ी नामक ग्राम के निवासी थे यह जाति के ब्राह्मण थे अपने पदों में इन्होंने बार-बार शिवनारायण को गुरु स्वीकार किया है। संप्रदाय के व्यापक प्रचार का श्रेय भी इन्हीं को दिया जाता है, इन्होंने ही स्वामी जी के अनुयायियों को संगठित कर संप्रदाय का रूप दिया। स्वामी जी के चतुर्थ शिष्य संत लेखराज जी भी नरौली वंश के राजपूतों के भांट थे, शब्दावली में इनके भी कुछ सवैया प्राप्त है। लेकिन इनमें उनकी जाति का उल्लेख नहीं है। जुबराज जी स्वामी जी के पांचवें शिष्य थे यह भी नरौली वंश के भांट थे। चंदवार से उत्तर में बसे सरुवाय गांव के रहने वाले थे। इनके उपलब्ध छंदों में चार सवैया और दो गेय पद हैं। उनकी कवित्व शक्ति अन्य संतों से बढ़कर है। इन पांच शिष्यों के अतिरिक्त शब्दावली में कुछ अन्य संत कवियों के पदों का भी उल्लेख मिलता है। जिनमें प्रमुख रूप से गेंदाराम, राजरूप और लाल दास उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त श्री रमाशंकर सिंह पुजारी सतना धाम, बाबा मंगलदास हुकुमी महंत लाहौर, डॉ. चंगू लाल महंत छावनी कानपुर तथा पुजारी बेनी सिंह पथिक कर्नलगंज कानपुर आदि प्रसिद्ध हैं।

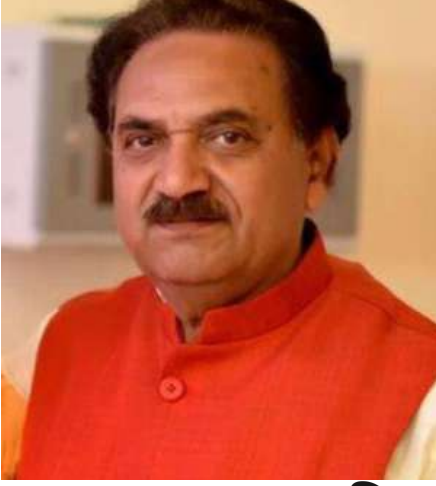
संत शिवनारायण साहब के ग्रंथों का साहित्यिक विवेचन भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वान दोनों ने किया है। विल्सन से लेकर परशुराम चतुर्वेदी ने लगभग 25 ग्रंथों की संख्या बताई है, जो आज भी शोध का विषय है।

डॉ नगेंद्र ने अपने इतिहास ग्रंथ में लिखा है, "प्रसिद्ध है कि इन्होंने ज्ञान योग से संबद्ध 16 ग्रंथों की रचना की है, जिनमें गुरुन्यास सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इसमें 12 खंडों के अंतर्गत इन्होंने जो विचारधारा व्यक्त की है वह वस्तुतः स्वानुभूतिपरक ज्ञानोपदेश ही है।" डॉ रामचंद्र तिवारी ने अपने शोध ग्रंथ में नागरी प्रचारिणी सभा के अन्वेषकों का सहारा लेकर लिखते हैं, "इस प्रकार अंततोगत्वा संत शिवनारायण की सात पुस्तकें गुरुन्यास, संत विलास, संत सुंदर, संत परवाना, संत उपदेश, शांताखरी और शब्दावली प्रमुख है।"

स्वामी शिवनारायण संप्रदाय के अनुयायियों का अगर सामाजिक संरचना के आधार पर अध्ययन किया जाये तो महत्वपूर्ण रोचक तथ्य सामने आते हैं। संप्रदाय के अनुयायियों में सर्वाधिक मतावलम्बी बहुजन समुदाय से हैं, तदोपरांत संख्या के आधार पर अवरही क्रम में क्रमशः वैश्य, क्षत्रिय व ब्राह्मण हैं। संप्रदाय की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि उस समय समाज के दलित वर्ग को सम्मान देते हुए उनके धर्मान्तरण को रोकने में अपार सफलता प्राप्त करना रहा है। दलित समाज का एक बड़ा वर्ग धर्मान्तरण करा चुका होता यदि शिवनारायणी संप्रदाय उन्हें समय से सहारा न देता। सच तो यह है कि आज हम जिस समतामूलक समाज के निर्माण की बात करते हैं, स्वामी शिवनारायण संप्रदाय ने अपने मतों व रचनाओं के माध्यम से उस समाज की स्थापना करने में सफलता अर्जित की है।

अशरीरी निःस्वार्थ प्रेम- रासलीला

श्रीकृष्ण का जीवन गूढतम विलक्षणता से भरा है जिसका अनुभव हमारी बुद्धि को नहीं हो पाता है। श्रीकृष्ण ने अपने चरित्र से जीवन का संदेश दिया है।



जय प्रकाश नारायण मिश्रा

प्रयागराज

गोपी- श्रीकृष्ण रासलीला पर राजा परीक्षित को भी संदेह हुआ था। आज भी तथाकथित विद्वानों को भी रासलीला पर शंका है। परन्तु रासलीला ने भक्तिशास्त्र में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त किया है। बुद्धिमान आचार्य एवं आध्यात्मिक पुरुष, जिन्होंने श्रीकृष्ण-जीवन का सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन किया है, रासलीला-विवाद होने पर भी श्रीकृष्ण को परमब्रह्म मानते हैं। अतः श्री कृष्ण - जीवन की भव्यता पहचानने हेतु गहरे पानी में उतरने की आवश्यकता है।

सामान्य जन को समझ है कि बिना स्वार्थ, आकर्षण या वासना के प्रेम संभव नहीं है। बिना व्यक्ति अथवा वस्तु के प्रेम हो ही नहीं सकता है। स्त्री पुरुष का प्रेम अशरीरी भी हो सकता है, बिना स्वार्थ के हो सकता है, इसकी कल्पना सामान्यजन को नहीं होती है। जिसे हम प्रेम समझते हैं वास्तव में वह स्वार्थ पर आधारित भूख है, वासना है जो उपभोग के बाद समाप्त हो जाती है अथवा उपभोग नहीं मिलने पर जीवन को

नष्ट कर देती है। हम स्त्री- पुरुष की वासना को प्रेम का नाम देते हैं जो सत्य नहीं है।

श्रीकृष्ण ने जगत को समझाया कि व्यक्ति का व्यक्ति से या स्त्री व पुरुष का अशरीरी प्रेम संभव है। यही समझाने के लिए तथा वास्तविक प्रेम निःस्वार्थ भावना पर आधारित होता है, यह संदेश देने के लिए श्रीकृष्ण ने रासलीला का अभिनय गोपियों संग किया। गोपियों को सच्चे प्रेम का दर्शन कराकर उन्होंने उनका जीवन बदल दिया।

श्रीकृष्ण ने कहा कि, 'स्त्रियों को बदलकर संसार को बदला जा सकता है। श्रीकृष्ण गोपी के मध्य अशरीरी (Occult) आत्मिक प्रेम का प्रयोग 'रासलीला', आध्यात्मिक पुरुषों के लिए महान दिशानिर्देश है। रासलीला के समय कृष्ण की उम्र सात वर्ष थी। बड़े होने पर रासलीला प्रयोग करते तो लोग उनके चरित्र पर कीचड़ उछालते। भगवान ने यह कार्य अत्यन्त बुद्धिमतापूर्वदृष्टि से सम्पन्न किया। स्त्रियों को सुधार कर जगत को भगवान ने सुधारा।

हम श्रीकृष्ण के लिए क्या- क्या बोलते हैं ? यह सब भगवान को मालूम है। कंस भी कहता था कि कृष्ण तो स्त्रियों के मध्य बैठने वाला है। परन्तु जब श्रीकृष्ण ने सम्पूर्ण गोकुलवासियों का जीवन बदल दिया तभी से उन्हें "गोपीवल्लभ" (अर्थात् गोपियों के (जिनके जीवन पवित्र हो गये थे) स्वामी) पदवी से पुकारते हैं।

दशहरा-दीपावली

मनोज कुमार सिंह

लेखक/साहित्यकार/ उप-सम्पादक कर्मश्री मासिक पत्रिका



महज़ कागज़,घास- फूस, खर-पतवार से बने नकली दशानन के पुतले के दहन का पर्व नहीं दशहरा, बल्कि हमारे मन, मस्तिष्क और हृदय में गहरे रूप से व्याप्त समस्त दुर्गुणों,विकारों, दुष्प्रवृत्तियों और दुर्व्यसनों को पुरी तरह जलाकर खाक में मिला देना ही दशहरा का असली निहितार्थ है। आज ही के दिन युगों-युगों के महानायक मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने दुर्गुणों, विकारों, दुष्प्रवृत्तियों और दुर्व्यसनों के प्रतीक दुष्ट दशानन का वध कर वसुन्धरा पर चतुर्दिक चहुँओर और चहुँदिश सत्य, अहिंसा, न्याय, करूणा, दया, परोपकार, ममता और मानवता का साम्राज्य प्रवर्तित करने का श्लाघनीय कार्य किया था। अहंकार, अत्याचार, अनाचार, व्यभिचार, लोभ, छल, कपट, प्रपंच से भरी आसुरी शक्तियों तथा राक्षसी प्रकृति से पूर्णतः दूषित, प्रदूषित, कलुषित रावणत्व को पूरी तरह से मार कर और दया, करूणा, परोपकार, त्याग, तपस्या, बलिदान और समस्त नैतिक तथा मर्यादित गुणों से विभूषित

रामत्व को पूरी तरह आत्मसात और हृदयांगम करने का पर्व दशहरा हमारी गौरवशाली सामाजिक, सांस्कृतिक परम्परा का सर्वाधिक लोकप्रिय, लोक-सहभागिता का पर्व है। भारतीय तीज-त्यौहारों-उत्सवों की परम्परा में दशहरा भारतीय सांस्कृतिक और साहित्यिक श्रेष्ठता, उत्कृष्टता और सर्वोच्च नैतिक मूल्यों, मर्यादाओं की पराकाष्ठा को लोक जीवन में चरितार्थ करने का महापर्व है। लोक-जीवन में लोक मंगल की कामना के साथ लोक-सहभागिता, लोक-मिलन, लोक-सहकार का यह महान लोक- उत्सव न केवल भारत बल्कि सम्पूर्ण विश्व में जहां भी भारतवंशी रहते हैं वहां पूरे उल्लास और उत्साह से मनाया जाता है।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम सम्भवतः सम्पूर्ण वैश्विक समाज के इतिहास में इकलौते ऐसे महानायक, युग प्रवर्तक, युगद्रष्टा हैं जिनके सम्पूर्ण जीवन दर्शन, सम्पूर्ण जीवन चरित्र, व्यक्तित्व और कृतित्व के रंग में सम्पूर्ण भारतीय जनमानस दशहरा से लेकर दिवाली तक पूरी तरह सराबोर रहता है और इतने लम्बे समय तक सदियों से मेले और उत्सव का चलन-कलन रहता है। लोक मंगल की कामना और लोक कल्याण की भावना से पूरी तरह अभिरंजित दशहरा का महापर्व मर्यादा पुरुषोत्तम राम के व्यक्तित्व, कृतित्व और चरित्र का अनुसरण, अनुकरण और अनुश्रवण करते हुए मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन चरित्र के अनुरूप अपने व्यक्तित्व कृतित्व चरित्र को गढ़ने-सवारने और ढालने का स्वर्णिम अवसर होता है। युग पुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम राम के त्याग, तपस्या, उत्सर्ग और बलिदान से परिपूर्ण राजनीतिक किरदार और मर्यादित लोक आचरण और त्रेतायुगीन महान

राजनीतिक परिपाटी और परम्परा वर्तमान दौर की छल-कपट, प्रपंच और फरेब से सराबोर राजनीति को मर्यादित और मार्गदर्शित करने कार्य कर सकती है।

भारतीय गांवों के साथ-साथ कम्बोडिया, इण्डोनेशिया, मॉरीशस जैसे कई देशों में सदियों से प्रचलित रामलीलाओं के माध्यम से राम के सम्पूर्ण जीवन चरित्र को लोकजीवन में उतारने के प्रयास से हमारा भारतीय समाज नैतिक रूप से प्रतिवर्ष ऊर्जस्वित ओजस्वित होता रहता है। रामलीला और रामकथा के नैतिक मूल्यों, मान्यताओं आदर्शों से अभिसिंचित भारतीय समाज में इस बाजारवादी दौर में भी नैतिक मूल्य अगर जिन्दा है तो मर्यादा पुरुषोत्तम राम को समर्पित दशहरा और दिवाली जैसे त्यौहार का सकारात्मक परिणाम है। आइये हम इस वर्ष अपने मन मस्तिष्क और हृदय में घर कर गये रावण को पूरी तरह जलाकर राख कर देने के संकल्प के साथ दशहरा-दीपावली मनाएं ।

Emberke

R Á M N Y I T J A A Z A J T Ó T

मुझ पर खुलता दरवाज़ा



हंगरियन कवियत्री काफ़्का मार्गिट (Kaffka Margit) का जन्म 10 जून 1880 को हुआ व मृत्यु 1 दिसंबर 1918 ई को बुडापेस्ट में हुई प्रसिद्ध कवि व अनुवादक श्री इन्दुकांत अंगिरस जी ने इनकी कविता Emberke (छुटका पहलवान) की Rámnyitja az ajtót (मुझ पर खुलता दरवाज़ा) का अनुवाद हिंदी भाषा में किया है

आपका युट्युब लिंक :

Sahitya Sargam

<https://www.youtube.com/@SahityaSargam>



Emberke- छुटका पहलवान

Rámnyitja az ajtót (मुझ पर खुलता दरवाज़ा)

माँ, यहाँ हो तुम ? आदतन दबे पावँ चली आई हो
तुम्हारे बेटे का अभिवादन कौन करेगा ? भूल गई हो
अँधेरे में चमकती आँखें ? अग्निष्ठिका के पास, देखूँ उधर
मिल गयी, उल्लू हो तुम, जलती तुम्हारी हथेलियाँ इधर
लग जाऊँ गले ? कोई प्रेम से पूछे तो सिर्फ़ गूंगे जवाब नहीं
देते

-तुम्हीं ने कहा था कि उल्लू की आँखें अँधेरे में चमकती हैं
इसीलिए नाराज़ हो क्या ? आख़िर कब बोलोगी प्यारी माँ
देखो! मैंने पूरी कॉफ़ी पी डाली, चाहो तो पूछ लो बाई से
नहाते वक्त रोया भी नहीं, सब बटन भी लगाएँ हैं ठीक से
गले से "क " का उच्चारण भी सीख गया," क " से कुत्ता,
कॉफ़ी

ठीक हैं न, क्योंकि मैं हूँ तुम्हारा इकलौता समझदार बेटा
स्नोवाइट की तस्वीर बनाई,
पर इसके पैर ताबूत में पसरते नहीं

अनुवादक -
इन्दुकांत आंगिरस

मुझ पर खुलता दरवाज़ा

बड़े हो कर तुम्हारी तरह बनाऊँगा अक्षर, और तुम्हारी तरह
 मिलेंगे मुझे भी बहुत पैसे, और तब रोज़ लाऊँगा मैं
 कार, तलवार और पासा, लेकिन तुम्हारे लिए यह सब नहीं, बल्कि
 लाऊँगा केक, किताब और दस्ताने, जैसे स्नोवाइट के लिए लायें बौने
 और घोड़ा औ' बन्दूक अपने लिए, तुम आज कुछ नहीं लाई मेरे लिए ?
 सिर्फ़ मज़ाक में पूछता हूँ, नहीं लाई फिर भी तुमसे प्रेम करता हूँ
 सिर्फ़ गंदे बच्चे माँगते हैं हर रोज़ कुछ न कुछ
 आज वो बर्फ़ वाली कविता सुनाओ, बर्फ़ गुलगुलो का आँचल
 क्या हुआ है माँ तुम्हें ? फिर पहले की तरह उदास हो तुम ?
 तुम्हें किसी ने दुखी किया है क्या ? मैं डंडे से मारूँगा उसे
 जानती हो, पिछले साल मेरी लाल गेंद भी छीन ली थी
 उस गुंडे ने सड़क पर, लेकिन तब मैं सिर्फ़ एक छोकरा था
 पर अब गुरुगुंठाल हूँ मैं, ठोकूँगा ख़ूब उसे गर मिल गया तो
 माँ, तुम्हें चूमा नहीं अभी तक, उदास मत हो, अपना मुखड़ा दो
 इधर झुको .. नहीं झुक सकती, जानती हो, महाआलसी हो तुम
 ठीक है, कुर्सी पर चढ़ कर आता हूँ, आह.. बहुत भारी है कुर्सी
 यहाँ .. दुखता है माथा ? अभी भगाता हूँ दर्द, चूमता हूँ उधर ही
 पुच्च .. एक बार और, तीन बार.. और एक बोनस
 देखो ! अब तुम बिलकुल ठीक हो गयी हो
 ठीक है न मेरी प्यारी माँ, मुश्किल काम था
 पर कोई बात नहीं
 लेकिन अब तो तुम मेरे साथ खेलो माँ !

इन्दुकांत जी का युट्युब लिंक :

Sahitya Sargam

<https://www.youtube.com/@SahityaSargam/featured>

मठहाउस

दिलीप कुमार

मठ आबाद रहे मठाधीश आबाद रहे मठाधीशी जिंदाबाद



प्रश्न – हिंदी साहित्य के वर्तमान परिवेश में मठ और मठाधीशों की क्या स्थिति है ?

उत्तर- हिंदी साहित्य इस समय मठ और मठाधीशों के क्रमिक रूपांतरण की प्रक्रिया से गुजर रहा है । कोरोना काल में यात्रा करने की बंदिशों के मद्देनजर कई मठ खाद पानी (परनिंदा) के अभाव में ध्वस्त हो चुके हैं लेकिन उनके भग्नावेष यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं। इन मठों से निकले हुए चले-चपाटे (सखियां-सहेलियां) अभी भी इन मठों को महत्वपूर्ण, समीचीन और किले की भांति मजबूत मानते हैं, तथापि नए

किलेदार ने सबसे मजबूत और मठों के प्रकाश स्तंभ माने जाने वाले मठ को प्राइवेट लिमिटेड घोषित कर दिया है और भारत के कम्पनी ला कानून के मुताबिक सौ-सौ रुपये के मानदेय पर लिखी गई रचनाओं को मठ की बौद्धिक सम्पत्ति मान लिया गया है । मठ के टीम लेखक (जिन्हें लोग गिरोह लेखक कहते हैं) इस प्राइवेट लिमिटेड को इसलिये अपनी सेवाएं देते हैं और खुद को साहित्य का सेक्युलर जीव और बौद्धिकता का लाइट हाउस मानते हैं। ये लोग अपने मठ से बाहर लिखने वाले लेखकों को कम्प्यूनल, संघी-कंघी लेखक कहकर खारिज करते हैं। इसी तर्ज पर आबाद किये गए बनारस,इलाहाबाद, भोपाल जैसे लघु मठ केंद्रों पर अतीत में लाइट हाउस मठ से प्रेरित गतिविधियों का संचालन होता रहा था, परन्तु प्रमुख मठाधीशों के काल-कवलित और बीमार होने के कारण इस मठ की गतिविधियां मंद पड़ गयी थीं। फिर कोरोना काल की दुश्चारियों ने मठ को ना सिर्फ खंडहर बना दिया बल्कि मठ को पदस्थापना भी अन्यत्र करनी पड़ी। सो कुछ वर्षों पूर्व तक सुरा-सुंदरी की चर्चा से शुरू होकर चरित्र हनन का केंद्र बन जाने वाले अधिकांश मठों में वर्तमान में सिर्फ पढ़ाई-लिखाई और व्यापारिक कोलैबोरेशन की बातें होती हैं कि क्रांति के नाम पर इक्ठ्ठा की गयी बौद्धिक सम्पत्ति को इनकैश कैसे कराया जा सके। ध्यातव्य है कि लेखन की इस बौद्धिक संपदा के मानदेय का भुगतान साम्प्रदायिकता से लड़ने के नाम पर चंदा प्राप्त करके किया गया परन्तु अब ये बाजार में बिकने को रखे हैं। स्वर,आडियो,वीडियो से लेकर प्रिंट तक, ये उस बकरे की तरह हैं जिसमें मांस, हड्डी तक बिक जाने के बाद उसकी खाल तक बेच दी जाती है । अतः विमर्श और मुक्ति के नाम पर संग्रहित समग्र सामग्री जो क्रांति करने के लिये इक्ठ्ठा थी अब वैल्यू अनलाकिंग की प्रक्रिया में है, क्रांतिकारी लेखकों के तरकश के उधार में मिले तीर अब उनकी सन्तानों के बचत खाते में जाकर उनका भला कर रहे हैं।

मठ आबाद रहे मठाधीश आबाद रहे मठाधीशी जिंदाबाद

प्रश्न – मठों की उपादेयता की विवेचना करें और विधाओं के प्रकाश में सन्दर्भ व्याख्या करें।

उत्तर – मठ आवश्यक हैं और मठाधीश भी, विधाएं बदलती रहती हैं। पहले अतुकांत कविता से क्रांति के प्रयास हुए, प्रयास सफल रहे । कविता सभी से कट गयी, जो लिखते हैं वो भी नहीं बता सकते कि उनकी कविता का मन्तव्य क्या है। कविता के बाद पाठकों की बारी कहानीकारों से त्रस्त होने की थी, इसमें सुबह से शाम तक क्या बीता टाइप के लेखन और सॉफ्ट पोर्न की लिपिबद्धता को देखा -भोगा यथार्थ मानकर कहानी का मुलम्मा पहनाया गया, ऐसे लेखक -लेखिकाओं की बहुत बड़ी कतार है, जिनसे पाठक न सिर्फ त्रस्त बल्कि पढ़ने को अभिशप्त हैं । अकहानी, नई कहानी जैसे पड़ावों से गुजरती अब ये तेरी मेरी कहानी बन गया है। सुरा-सुंदरी के इर्द -गिर्द बिताए गए समय को लिखकर मठों की जड़ों को मजबूत किया जाता है, होड़ है कि कौन किसकी पोल खोलेगा और कितनी छीछालेदर करेगा या करवाएगा।



डॉ मनीष कुमार पाण्डेय
डेंटल सर्जन,
बीडीएस, एफएजीए, एमआईडीए
सुमन हेल्थ केयर, सकलडीहा, चंदौली

दन्त स्वास्थ्य: आपके स्वास्थ्य का आईना

आपने कभी विचार किया है कि क्यों कुछ लोग अपनी मुस्कान के साथ क्यों बेहद आत्मविश्वासी और संतुलित दिखते हैं, तो उत्तर वही है - उनके दांत स्वस्थ होते हैं। दांत सिर्फ दिखावे के लिए नहीं होते, वे हमारे सामान्य स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। यहाँ हम आपको बताएँगे कि डेंटल हेल्थ आपके स्वास्थ्य के लिए क्यों महत्वपूर्ण है, कैसे आप अपने दांतों की देखभाल करके स्वास्थ्य और आत्मविश्वास को बढ़ा सकते हैं, और सामान्य स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव देंगे।

सामान्य स्वास्थ्य का द्वार: आपका मुख आपके स्वास्थ्य का दरवाजा होता है। आपके मुँह में होने वाली समस्याएं आपके शरीर के बाकि भाग को प्रभावित कर सकती है। मुँह के रोग, जैसे कि मसूड़ों की बीमारी, दिल की बीमारी, लकवा और मधुमेह से जुड़ी हो सकती हैं। नियमित दंत चिकित्सा जांच आपके स्वास्थ्य समस्याओं को महत्वपूर्ण रूप से पहचानने में मदद करती है।

बीमारी से बचाव है उपचार से बेहतर: पुरानी कहावत डेंटल हेल्थ में भी सत्य है। अच्छी ओरल हाईजीन का पालन करके आप दांतों से होने वाली समस्याओं से बच सकते हैं। अपने दांतों को कम से कम दो बार दिन में मंजन करें, दांत के बीच में कचरा निकालने के लिए डेंटल फ्लॉस का इस्तेमाल करें, और जंक फूड्स की मात्रा को सीमित करें।

सुंदर दिखने में भी लाभ: एक खूबसूरत मुस्कुराहट आत्मसम्मान और विश्वास को बढ़ाता है। दांत चमकाने की, दांत सीधे करने की या कैप लगाकर दांत के सड़ने के इलाज से आपको अपने सच्ची मुस्कान को पा सकते हैं।

हर उम्र के लिए दंत स्वास्थ्य: दंत स्वास्थ्य हर उम्र के व्यक्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है, बच्चों से लेकर वृद्धों तक। बच्चों को छोटे से दांतों की सफाई के लिए अच्छी आदतें सिखाना एक स्वस्थ मुस्कान की शुरुआत होती है। वृद्ध व्यक्तियों को अपने दंत स्वास्थ्य को बनाने पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि समय के साथ दांतों पर कुछ विशेष समस्याएं आती हैं।

तंबाकू से दूर रहें: धूम्रपान और तंबाकू का सेवन आपके मुँह और सामान्य स्वास्थ्य दोनों के लिए हानिकारक होता है। ये मसूड़ों की बीमारी, दांतों का गिरना, और मुँह के कैंसर तक का कारण बन सकते हैं। तंबाकू छोड़ना आपके दांत और स्वास्थ्य के लिए बेहतर फैसला है।

दांत और मुँह के स्वास्थ्य से जुड़े कुछ मिथक और उनके सही जवाब दिए गए हैं:

मिथक: चीनी से दांत का दर्द होता है।

तथ्य: चीनी खाने से दांत दर्द नहीं होता। दांत दर्द का कारण मसूड़े की सूजन, या अन्य समस्याएं हो सकती हैं। परन्तु, ज्यादा चीनी खाना कैविटीज़ का कारण बन सकता है, इसलिए चीनी की मात्रा पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है।

मिथक: दांत दर्द होने पर एस्पिरिन को सीधा दांत पर लगाना चाहिए।

तथ्य: एस्पिरिन या अन्य दवा को दांत पर लगाने से दांत दर्द से छटकारा नहीं मिलता। दांत दर्द के उपचार के लिए दंत चिकित्सक से सलाह लेना बेहतर है।

मिथक: दांतों के लिए कोल्ड ड्रिंक या ठंडा पानी हानिकारक है।

तथ्य: ठंडा पानी के सेवन से दांत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। परन्तु, ज्यादा कोल्ड ड्रिंक पीने से बचे, क्योंकि ये आपके मुँह के पीएच को प्रभावित कर सकते हैं और इसमें मौजूद शर्करा आपने दांतों में कैविटीज़ का कारण बन सकती है।

मिथक: ब्रश करने के लिए ज्यादा ताकत लगानी चाहिए।

तथ्य: ज्यादा ताकत से ब्रश करने से दांत और मसूड़ों पर नुकसान हो सकता है। दांतों को धीरे-धीरे और समझदारी से साफ करना चाहिए।

मिथक: दाँत की सफाई कराने से दांत पतले हो सकते हैं

तथ्य: दांतों की सफाई कराने से दांतों को कोई क्षति नहीं होती है। बल्कि दांतों पर जमा कैल्कुलस और प्लॉक साफ़ हो जाते हैं जिससे मुँह की दुर्गन्ध और मसूड़ों से खून निकलने की समस्या का समाधान हो जाता है।

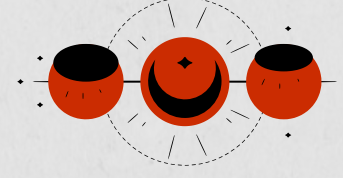
मिथक: दाँत निकलवाने से आँखों की रौशनी पर प्रभाव पड़ता है।

तथ्य: ऐसा बिलकुल भी नहीं होता है। दाँत निकलवाने से आँखों की रौशनी से कोई सम्बन्ध नहीं है।

दाँत और मुँह के स्वास्थ्य के बारे में सही जानकारी प्राप्त करने और दंत चिकित्सक की सलाह लेना महत्वपूर्ण है, ताकि आप गलत मिथकों से बच सकें और अपने स्वास्थ्य को बेहतर बना सकें।



कहानी - जोड़-घटाव



कहानीकार - नीरजा हेमेन्द्र

आज पहली तारीख है। रामचन्द्र काम पर जाने की तैयारी कर रहा है। प्रतिदिन की अपेक्षा वह आज कुछ अधिक खुश है। इसका कारण वही कि आज पहली तारीख है। पहली तारीख आते-आते उसके वेतन के पैसे खर्च हो जाते हैं। आज मालिक वेतन देते हैं। बस, यही कारण है रामचन्द्र की खुशी का। सुबह के आठ बजे हैं। वह नहा-धोकर काम पर जाने वाला कुर्ता-पायजामा पहन कर तैयार है। उसकी पत्नी शकुन्तला रसोई में भोजन बनाने में व्यस्त है। उसे समय पर रामचन्द्र के लिए भोजन तैयार करना है। साथ ही दोपहर के लिए टिफिन भी रखना है।

बालों में तेल लगाकर, कंधी कर अब रामचन्द्र बिलकुल तैयार हो चुका है। काम पर जाने का समय भी होने लगा है। भोजन कर वह सीधे कम पर चला जाएगा। हाथ धोकर वह रसोई में चला गया।

” भोजन तैयार है क्या बटू की माँ? ” रसाई में जा कर उसने शकुन्तला से पूछा।

” हाँ....हाँ..। बस थाली में परोसना शेष है। सब तैयार है। ” कह कर रामचन्द्र की पत्नी शकुन्तला ने थाली में रोटी-दाल और लौकी की सब्जी परोस कर बरामदे में बिछे तख्त पर रख दिया। साथ में एक लोटा पानी भी रख दिया।

नीरजा हेमेन्द्र जी ख्यातिप्राप्त वरिष्ठ साहित्यकार हैं, आपके तीन उपन्यास “ललई भाई”, “अपने-अपने इन्द्रधनुष” और “उन्ही रास्तों से गुज़रते हुए” तथा सात कहानी संग्रह और चार कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

आपको उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का विजयदेव नारायण साही पुरस्कार, शिंगलू स्मृति सम्मान, फणीश्वरनाथ रेणु स्मृति सम्मान, कमलेश्वर कथा सम्मान, लोकमत पुरस्कार, सेवक साहित्यश्री सम्मान, हाशिये की आवाज़ कथा सम्मान आदि प्राप्त हो चुका है।

“जोड़-घटाव” कहानी रामचंद्र के जीवन पर आधारित शानदार कहानी है, इसका पहला भाग आपके समक्ष प्रस्तुत है :

रामचन्द्र ने भोजन कर पानी पिया और दीवार में लगी घड़ी की ओर दृष्टि डाली। नौ बज रहे थे। दस बजे तक उसे दुकान खोलनी रहती है। समय हो गया है। अब उसे चल देना चाहिए। उसने घर के बारामदे में खड़ी अपनी साईकिल उठायी और दुकान की ओर बढ़ चला।

घनी आबादी वाले बाजार में एक कपड़े की दुकान पर रामचन्द्र काम करता है। लगभग सत्रह वर्ष हो गये उसे उस दुकान पर काम करते हुए। इतने वर्षों से काम करने और उसका व्यवहार देखकर मालिक उस पर सबसे अधिक विश्वास करते हैं। यही कारण है कि दुकान खोलने का उत्तरदायित्व उसे सौंप दिये हैं।

दुकान खुलने का समय यद्यपि दस बजे है। किन्तु रामचन्द्र की कोशिश रहती है कि दस बजे से पूर्व ही दुकान खुल जाये। वह ऐसा करता भी है। दस बजे से कुछ पूर्व ही दुकान खोल देता है। कपड़े की दुकान बड़ी है, इस कारण दो और कर्मचारी काम पर रखे गये हैं। दुकान खुली मिलती है तो वे आकर अपने काम पर लग जाते हैं।

रामचन्द्र साईकिल से दुकान की ओर बढ़ता चला जा रहा था। साईकिल चलाते-चलाते वह सोचता जा रहा था कि आज पहली तारीख है। आज उसे इस माह का वेतन मिल जाएगा। मालिक ने कहा है कि इस माह से उसकी तनखाह कुछ बढ़ा देंगे। ठीक ही सोचा है मालिक ने। इस महंगाई में उसे जितनी तनखाह मिलती है उससे घर चलाने में बहुत कठिनाई होती है। भीड़-भाड़ वाले बाजार से सम्हल-सम्हल कर साईकिल चलाते हुए रामचन्द्र यही सब सोचता चला जा रहा था। दुकान से कुछ पहले पड़ने वाली सब्जी मण्डी आ गयी। सुबह के दस भी नहीं बजे हैं, सब्जी मण्डी में अच्छी खासी भीड़ है। कुछ स्थाई सब्जियों की दुकानें ही खुली हैं।

वह जानता है कि आसपास के गाँव वाले कृषक दोपहर से कुछ पूर्व तक अपनी ताज़ी सब्जियों का सौदा लगा पाते हैं। किन्तु ताजी सब्जी लेने के लिए भीड़ इसी समय से होने लगी है। एकाध घंटे में कृषक आने शुरू हो जाएंगे।

कुछ मिनटों में रामचन्द्र दुकान पहुँच गया। दुकान का शटर उठाकर प्रवेश द्वार के भीतर की ओर दीवार पर लगे स्विचबोर्ड से दुकान की बत्ती जला दिया साथ ही पंखा भी चला दिया। काउंटर पर पहुँच कर उसने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई कि कपड़ों के थान इत्यादि सब व्यवस्थित रूप से अपने स्थान पर लगे है कि नहीं? एकाध कपड़े के थान थोड़े अव्यवस्थित रूप से रखा देख वह उन्हें ठीक करने में लग गया।

इतनी देर में साथ वाले दोनों कर्मचारी भी आ गये। ग्यारह बज गये। अभी तक एक भी ग्राहक नहीं आया था। दुकान के मालिक जिन्हें सब रस्तोगी बाबू कहते हैं, वे भी ग्यारह बजे तक आ जाते हैं। कभी-कभी आने में कुछ विलम्ब भी हो जाता है। समय पर दुकान खोलने और उनके आने तक दुकान की देखभाल करने का उत्तरदायित्व उन्होंने रामचन्द्र पर डाल रखा है। मालिक रामचन्द्र पर विश्वास करते ही हैं, उससे कुछ अधिक स्नेह भी रखते हैं।

कुछ ही देर में मालिक आ कर अपनी गद्दी पर बैठ गये। इस समय साढ़े ग्यारह बज रहे थे।

“ कितनी बिक्री हुई? ” आते ही मालिक ने पूछा।

“ अभी तक तो नहीं मालिक। ” रामचन्द्र ने कहा।

“ कोरोना को आये हुए दो वर्ष हो गये। कोरोना का प्रभाव भी अब कम हो गया है। किन्तु बाजार की स्थिति अभी तक नहीं सम्हली है। ” मालिक ने चिन्तित होते हुए कहा।

” हाँ मालिक, सो तो है। किन्तु कपड़े की खरीदारी के लिए महिलाएँ घर के कार्यों को करने के पश्चात् ही इत्मीनान से बाजार के लिए निकलती हैं।....दोपहर के पश्चात् ही ग्राहक आएंगे।” रामचन्द्र ने मालिक को ढाढ़स बँधाते हुए कहा। मालिक ने सहमति में सिर हिला दिया।

दोपहर तक नहीं बल्कि तीसरे पहर कुछ लड़कियाँ व महिलाएँ दुकान पर आयीं। उन्हें देखते ही रामचन्द्र इस प्रकार खुश हो गया जैसे भक्त को भगवान के दर्शन हो गये हों। उनमें से कुछ को सलवार सूट के लिए कपड़े चाहिए थे, तो कुछ को साड़ी। साड़ी लेने वाली महिलाएँ साड़ी वाले काउण्टर पर और सूट लेने वाली सूट के काउण्टर पर खड़ी हो गयीं।

दोनों लड़के कपड़े दिखाने में व्यस्त हो गये। यदि किसी को मैचिंग ब्लाउज पीस, मैचिंग दुपट्टे जैसे वस्त्रों की आवश्यकता होती तो उसके लिए रामचन्द्र था। क्यों कि ये सब वस्तुएँ रामचन्द्र के काउण्टर पर रहती हैं। किन्तु इसकी आवश्यकता नहीं पड़ी। महिलाओं की संख्या छः-सात थी। बिका मात्र एक सलवार सूट। रामचन्द्र सोचने लगा कि मालिक सही कह रहे हैं कि कोरोना आया और चला भी गया किन्तु बाजार अभी तक नहीं सम्हल पाया है।

शाम होने लगी। कुछ ग्राहक और आये। कुछ ने कपड़े खरीदे, कुछ ने सिर्फ देखे और चले गये। रात्रि के नौ बजने लगे। दुकान में ग्राहकों का आना कम होते-होते और कम होने लगा। जब कि बाजार में लोग बाग अभी अच्छी खासी संख्या में थे। परचून, बर्तन आदि की दुकानों से लोग खरीदारी भी कर रहे थे।

दस बजे दुकान बन्द होने से पूर्व मालिक ने तीनों कर्मचारियों को वेतन दे दिया। रामचन्द्र कभी मालिक के दिये पैसे नहीं गिनता। घर जाकर ही देखता है।

उसे मालिक पर पूरा विश्वास है। वह यह भी जानता है कि मालिक ने कहा है कि इस माह कुछ पैसे बढ़ा देंगे, तो अवश्य बढ़ा दिये होंगे। वह घर जाकर देखेगा कि कितना बढ़ाया? क्या बढ़ाया?.....इन्हीं सब बातों को सोचता हुआ रामचन्द्र घर पहुँच गया।

बिटिया अपने कमरे में पढ़ रही थी। रामचन्द्र ने पगार निकाल कर आलमारी में रख दिया। हाथ-मुँह धोकर एक कप चाय पी कर वह अपने कमरे में आ गया। आलमारी से निकाल कर अपनी पगार गिनने लगा।

....ये क्या पगार तो उतनी ही है, जितनी हमेशा मिलती है। तो मालिक ने इस माह भी कुछ नहीं बढ़ाया?....रामचन्द्र मन ही मन बुदबुदा उठा।

.....ओह! महंगाई इतनी अधिक बढ़ गयी है। चीजों के दाम आसमान छू रहे हैं। इतने पैसों में घर चलाना कठिन होता जा रहा है। दो समय का भोजन और बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था करते-करते उसकी कमर टूट जाती है। पैसे तो महीना खत्म होने से पूर्व ही खत्म हो जाते हैं।....महीने के अन्तिम सप्ताह में तो घर में सब्जियाँ आनी बन्द हो जाती हैं। रोटी-दाल, रोटी-भरता यही सब भोजन में बनने लगता है।.....

.....इसी चिन्ता में रामचन्द्र बिस्तर पर निढाल लेट गया। कमरे की छत की ओर देखते हुए सोचने लगा कि क्या जुगत करे कि इतने पैसों में घर की आवश्यकताएँ पूरी हो जायें?

” क्या हुआ? दुकान से आकर आज लेट गये? चाय भी नहीं पी। लेटे-लेटे क्या सोच रहे हो? ” चाय लेकर पत्नी कमरे में आ गयी और तिपाई पर रखते हुए बोली।

” क्या बताएँ? मालिक ने कहा था कि वे इस माह कुछ पैसे बढ़ा कर देंगे। किन्तु बढ़ाया नहीं। हम यही सोच रहे हैं कि इतने पैसे में घर कैसे चलेगा? ” रामचन्द्र तकिए का टेक लगा कर बैठ गये और चाय का कप ओठों से लगाते हुए कहा।

” पिछले माह भी तो मालिक ने कहा था कि पैसे बढ़ाकर देंगे। उस महीने न सही, इस महीने ही बढ़ा देते। ” रामचन्द्र की चिन्ता में सम्मिलित होते हुए पत्नी ने कहा।

” क्या करें? न जाने क्या बात है? महंगाई बढ़ती जा रही है। किन्तु मालिक ने कई बरस से कुछ भी बढ़ोत्तरी नहीं की। ” रामचन्द्र ने कहा। रामचन्द्र की बात सुनकर पत्नी कुछ नहीं बोली। मायूस होकर रसाई में चली गयी। उसे अभी भोजन बनाना था।

चाय पीने के पश्चात् रामचन्द्र घर के भीतर गया। उसने देखा बिटिया पढ़ रही है। बेटा इस समय ट्यूशन पढ़ने गया होगा। समय हो रहा है....घर आने वाला होगा। रामचन्द्र पुनः बाहरी कमरे में आकर लेट गया। घर-गृहस्थी को लेकर विचारों में उथल-पुथल पूर्ववत् थी।

” पापा...पापा...! ये देखो कितना सुन्दर और सस्ता सलवार सूट है। ” कुछ ही देर में बिटिया अपना मोबाईल फोन लेकर आयी और रामचन्द्र को दिखाती हुई बोली।

” कहाँ बिटिया....कहाँ..?मोबाईल में कैसा सूट बिक रहा है?” रामचन्द्र ने अचम्भे से कहा।

” देखिए पापा, ये सभी चीजें ऑनलाईन मिलती हैं। बाजार से सस्ती हैं। होम डिलीवरी करते हैं। होम डिलीवरी का मतलब कि सामान आपके घर पर पहुँच जाता है, कभी बहुत कम पैसे में तो कभी फ्री में। ” बिटिया कहती जा रही थी और रामचन्द्र उसकी बातें सुनते जा रहे थे। किन्तु वे बिटिया की बात पूरी

तरह समझ नहीं पा रहे थे जब कि फोन उनके हाथ में था।

फोन के स्क्रीन पर बहुत से घरेलू प्रयोग में आने वाली वस्तुओं के चित्र बने थे। वस्तुओं के मूल्य भी उनके नीचे लिखे थे। रामचन्द्र ध्यान से वस्तुओं और उनके मूल्य को देखने लगा।

” पापा, इस प्रकार की कई कम्पनी बाजार में हैं। जो कपड़े से लेकर घरेलू आवश्यकता की चीजें ऑनलाईन बेचती हैं और घर तक पहुँचाती हैं। ” रामचन्द्र मोबाईल देखते-देखते बेटा की बात सुन रहा था।

” ये देखिए पापा, दीपावली आने वाली है। इसलिए कम दामों पर ये सभी चीजें फेस्टिव ऑफर के अन्तर्गत मिल रही हैं। ” रामचन्द्र के हाथों से मोबाईल लेकर बिटिया ने कुछ घरेलू प्रयोग में आने वाली चीजों के चित्र दिखाते हुए कहा।

” ये देखिए पापा, ये हम दीपावली के लिए लेना चाह रहे हैं। ये हमारे नाप का है। दाम भी बहुत कम है। आप कहिए तो आर्डर कर दें। ” एक सलवार सूट का चित्र दिखाते हुए बिटिया ने मचलते हुये कहा।

रामचन्द्र मोबाईल हाथ में लेकर देखने लगे। सूट बहुत अच्छा दिख रहा था और रेट भी सही था।

” बोलिए न पापा! आर्डर कर दें? ” बिटिया ने आशा भरी दृष्टि से पापा की ओर देखते हुए पूछा।

” बताइए न पापा! मैं दीपावली के लिए यही सूट लेना चाह रही हूँ। ” पापा को असमंजस की स्थिति में देख कर बिटिया ने पुनः कहा।

” ठीक है ले लो बेटा। ” रामचन्द्र ने कहा और मोबाइल बिटिया को वापस कर दिया।

(कहानी का शेष व अंतिम भाग अगले अंक में क्रमशः)



बिकासुल

(प्रातः कालीन समय, कंपनी गार्डन का दृश्य, दो मित्र साथ में टहलते हुए)

पहला मित्र (टहलते हुए, उदास मन से) - छाले

दूसरा मित्र - (नीचे की तरफ आंख करके घूरते हुए गंभीर मुद्रा में) चप्पल पहन कर टहला करो

(दूसरा दिन)

पहला मित्र-छाले (दुखी मन से)

दूसरा मित्र - (अपनी भौहें कसते हुए) जूते पहन कर चला करो

(तीसरा दिन)

पहला मित्र -छाले

दूसरा मित्र- (गुस्से से लाल)जूते के साथ मोज़े भी पहन कर टहला करो

(चौथा दिन)

पहला मित्र -छाले

दूसरा मित्र-(गुस्से से तमतमाते हुए) उफ़ ये तुम्हारा पैर है या चेहरा?जब भी देखो,छाला-छाला-छाला ! यह लो बिकासुल और अपने पैरों में ही लगा लो

(पांचवा दिन)

पहला मित्र- छाले.....

दूसरा मित्र-(गुस्से में चिल्लाते हुए) अरे यार ?

(तभी बीच में टोकते हुए-)

पहला मित्र-(मुस्कराते हुए) छाले ठीक हो गए हैं.....

दूसरा मित्र- ओहहम्म

(एकटक उसे देखता रहता है)

हाफ टैटू

गिल्लू-चलो हम दोनों अपने हाथ पर टैटू बनवा लेते हैं।

किट्टू-अरे वाह ये तो बहुत ही अच्छा विचार है.

गिल्लू-हा वो तो हैं पर हमारे टैटू अधूरे रहेंगे।

किट्टू-अधूरे? मुझे कुछ समझ नहीं आया.

गिल्लू- हमारे टैटू तभी पूरे होंगे जब हम दोनों एक साथ होंगे। **(मुस्कराते हुए)**। हमारे टैटू सभी के लिए पहेली होंगे, वो हमारे मिलने पर ही पूरे होंगे।

किट्टू- सच में बहुत अच्छा आइडिया है और सुंदर भी.हम अलग होकर भी हमेशा साथ रहेंगे.

गिल्लू-हम्म या फिर हमेशा अधूरे एक-दूसरे के बिना



नेता जी

नेता जी जनसमूह को संबोधित कर रहे थे, "मैं आप लोगों के साथ हमेशा खड़ा हूँ, आप लोग बस मेरे साथ खड़े रहिये, मैं इस राज्य के मुख्यमंत्री जी से पूछना चाहता हूँ कि इन मासूम शिक्षकों का क्या दोष है जो इन्हें इनका पूरा हक नहीं मिल रहा है।" शिक्षक समूह ने पुरे हर्ष के साथ इस भाषण का स्वागत किया और नेता जी का साथ देने का वादा किया।

एक दिन नेता जी ने शिक्षकों को आन्दोलन के लिए आमंत्रित किया, नेता जी ने आमरण अनशन के लिए मंच की व्यवस्था की और अपने दो-चार चापलूस चेलों को लेकर आमरण अनशन पर बैठ गये। हालाँकि नेता जी के चेलों ने खाने-पीने की व्यवस्था कर रखी थी ताकि नेता कहीं मांग पूरी होने से पहले स्वर्ग न सिधार जायें, परन्तु ऐसा हुआ नहीं। संयोगवश मुख्यमंत्री जी का चुनावी कार्यक्रम उधर ही होना था तो मुख्यमंत्री जी घूमते-घामते आमरण अनशन स्थल

पर पहुँच गये, नेता जी को जूस पिलाकर आमरण अनशन खत्म किया और वादा किया कि शिक्षक हित में कार्य किया जायेगा। प्रत्येक शिक्षक की तरफ से नेता जी को बधाईयाँ आने लगीं। नेता जी कद और सम्मान थोड़ा और ऊँचा हो गया।

माननीय मुख्यमंत्री जी का कार्यक्रम होने वाला था और आज मुख्यमंत्री जी काफी बड़ा ऐलान करने वाले थे। नेता जी भी आज अपने पूरे यौवन में थे आज उन्हीं की बदौलत शिक्षक समुदाय का उद्धार होने वाला था, चारों तरफ लोगों का शोरगुल था। जय-जयकार के नारे लग रहे थे। मुख्यमंत्री जी ने खुला ऐलान किया, "आज से शिक्षकों का वेतन चपरासी की तुलना से बढ़ाकर विद्यालय के बाबू के बराबर किया जाता है। हमने अपना वादा पूरा किया, आपको आपका सम्मान हमने दे दिया क्योंकि आप इसके हकदार हैं। शिक्षक समुदाय ने पूरे हर्षोल्लास से इस फैसले का स्वागत किया। मुख्यमंत्री तथा नेता जी पूरे जोश से हाथ हिला रहे थे और समूची जनता आभार प्रकट कर रही थी।

मुख्यमंत्री जी का कमरा धुँए और गंध से भरा था, सामने नेता जी कुटिल मुस्कान के साथ मुख्यमंत्री जी को देख रहे थे और मुख्यमंत्री जी भी हलकी मुस्कान के साथ नेता जी को देख रहे थे। अचानक नेता जी ने कहा, "देखा साहब! मैंने कहा था न बाबू के बराबर वेतन वाली चाल चल जायेगी।" इसी के साथ मुख्यमंत्री जी ने मंत्री पद वाले आदेश-पत्र पर हस्ताक्षर किया और नेता जी की तरफ बढ़ा दिया। सब कुछ बदल चूका था सिवाय कमरे में भरे धुँए और गंध के।

ग़ज़ल © बृज राज किशोर “राहगीर” मेरठ

जितनी ज़्यादा दुनियादारी देखी है
क़दम-क़दम धोखा-मक्कारी देखी है।

मिल-जुलकर खा जाना है यह देश हमें,
लोगों की ऐसी तैयारी देखी है।

जब भूखों ने अपने बच्चे बेच दिए,
हमने ऐसी भी लाचारी देखी है।

जिनके चूल्हे बहुत दिनों से ठंडे हैं,
उनकी आँखों में चिंगारी देखी है।

सच में हमने सिर्फ़ ग़रीबी के कारण,
आँगन-आँगन बेटी क्वाँरी देखी है।

पाँच जवां बेटों की बूढ़ी अम्मा में,
बर्तन माँज रही दुखियारी देखी है।

नेताओं के छुटभैये चमचों में भी,
सत्ता की भरपूर ख़ुमारी देखी है।



मैं इन्तजार कर रहा हूँ ' © बृजेश गिरि
वरिष्ठ कवि, मऊ

उसने पूछा,
सिगरेट पीते हो,
मैंने कहा हाँ!
उसने पूछा,
शराब पीते हो,
मैंने कहा हाँ!
उसने पूछा,
माँस खाते हो,
मैंने कहा हाँ!
उसने फिर पूछा,
तब तो,
इश्क भी करते होगे!
मैंने कहा हाँ।
फिर उसने कहा
तुम अच्छे नहीं हो।
उसने फिर पूछा,
धर्म को मानते हो,
मैंने कहा हाँ!
उसने पूछा,
ईश्वर में आस्था है,
मैंने कहा हाँ!
अब उसने कहा,
तुम अच्छे हो।
मैंने भी उससे पूछ लिया,
आशाराम,नित्यानंद, परमानंद, राम रहीम, सोनी
बर्गीस,जैस के जार्ज आदि।
सबके सब धर्म को मानते हैं,
ईश्वर में उनकी आस्था है,
उसने कोई जवाब नहीं दिया,
और अब तक उसके जवाब का,
मैं इन्तजार कर रहा हूँ!

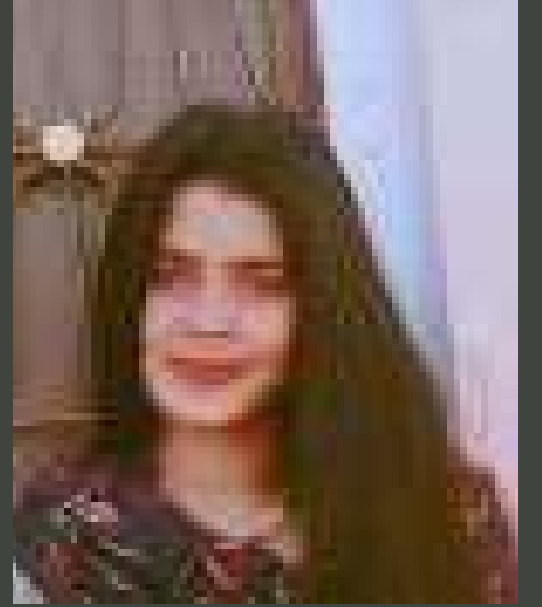


किन्नर हूँ मैं © अनिता रोहलन 'आराध्यापरी', नागौर, राजस्थान

न लड़की हूँ, न लड़का हूँ,
इस सृष्टि कि एक सुन्दर रचना हूँ मै,
समाज की बंदिशों मे बंधी मै अर्धनारीश्वर का स्वरूप हूँ,
छक्का, हिजड़ा, किन्नर न जाने क्या-क्या मिले मुझे,
मै भी माँ की कोख से जन्मा हूँ फिर क्या दोष है मेरा,
मै भी हूँ इस समाज का एक हिस्सा
फिर क्यों बना दिया तुमने मुझे अभिशाप,
गुम सा हो गया है मेरा अस्तित्व इंसानों की भीड़ में,
मेरे अपने भी पराये हुये जान मेरे वजूद की हकीकत,
बजा-बजा के तालिया हैरान परेशान हो गये है हालात मेरे,

इस समाज के सवालो से परेशान,
आखिर कब तक छुपाये हम खुद का अस्तित्व,
न चाहते हुये भी दफन है हजारों ख्वाईशे मेरी,
उन गुमनाम गलियों में शर्मसार कर देते है मुझे समाज
के सवाल,
क्या हो रहा मेरे जज्बातो के साथ,
बेमतलब निकल रहा मेरे सपनो का जनाजा,

मैं हूँ उस समाज की कहानी
जो कहने को उच्च विचारों वाला बनता है
देख मुझे मुँह फेर लेता है,
मैं हूँ दर्द, पीड़ा की कहानी,
लेकिन फिर भी हूँ मै बदनाम,
हर खुशी के मौके पे देती हूँ मै दुआएं हजार,
फिर भी मैं तिरस्कार की भागी बनती हूँ,
चेहरे पे बेहिसाब सूकून रखती हूँ,
मगर फिर भी खुद से अनजान रहती हूँ,
मेरे वजूद को तूने ताली तक सीमित कर दिया है,
आखिर क्यों ?
जिन पन्नो मे मेरे अस्तित्व को धिक्कारा जाता है,
उन पन्नो को मै फाड़ दूँ,
आजाद होकर मै खुद का वर्तमान लिख लूँ,
क्यों जन्म दिया तुमने मुझे ?



जब यह दूनियाँ मुझे फिजूल कहती है,
पेड़-पौधे, जीव -जन्तु कुछ भी बना देती
क्यो बनाया प्राणी मुझे,
मात्र दिखावे के लिए तुम मेरे रक्षक बनते हो,
पीठ पीछे तो तुम मुझे हिजड़ा ही कहते हो,
जाहिर कर देते हो तुम वो सारे दर्द
जो मै दबा के रखती हूँ
इस जालिम दूनियाँ से,
नही मानते तुम
मुझे अपनी दुनिया का हिस्सा,
पर अब चाहिए मुझे अक्स मेरा सच्चा,
हाँ!हाँ एक किन्नर हूँ मैं,
इस समाज में बदनाम बेइज्जत हूँ मैं ,
लेकिन तुम सब की तरह स्वार्थ के लिए
अपनों को नहीं बेचा है मैने कभी,
हाँ मेरा कोई ठिकाना नही है,
लेकिन सबको दुआएं देती हूँ
मै निःस्वार्थ भाव से,
हाँ!हाँ मै एक किन्नर हूँ ।